14/11/1967 मंगलवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– ये कौन आज आया सवेरे–2, कि दिल चौंक उठ्ठा सवेरे–2.....

ओम् शांति! ये कौन आया? भगवानुवाच्य। सुना, कौन आया? भगवानुवाच्य। देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता है; क्योंकि ये भी देहधारी है तो इनको तो भगवान नहीं कहा जा सकता है। बाकी बच्चे जानते हैं, रूहानी बच्चे कि बाबा आया हुआ। कि ये पहले ही से बताया जाता है कि देहधारी को कभी भी भगवान नहीं कहा जा सकता है; क्योंकि ये इनकी देह तो है नहीं। ये तो बच्चे सभी जानते हैं– ये पराई देह है; क्योंकि बाप खुद भी कहते हैं– मैं पराई देह में आता हूँ, तो इनकी तो नहीं ठहरी ना! ना, क्योंकि इसने बताय दिया– तो ये तो पुरानी देह है। बहुत जन्म के अंत के जन्म के भी अंत की ये देह है/शरीर है। बाप कहते हैं– मैं आ करके इनमें प्रवेश करता हूँ। तो ये इसकी तो देह हुई नहीं; क्योंकि ये तो भोक्ता है और बाप कहते हैं– मैं अभोक्ता हूँ। इसलिए इन शरीर से और मेरा कोई ताल्लुक नहीं है। बच्चे ने बुलाया है, बच्चों ने बुलाया है कि आय करके (...); अभी बच्चे समझते हैं अच्छी तरह से कि बाप आया है परमधाम से पराये देश में। ये भी तो समझ गए हैं ना बच्चे कि ऐसे इनके लिए नहीं कहेंगे– पराये देश में, पराये शरीर में आए हुए हैं। बच्चे जानते हैं कि बरोबर बाबा आए हुए हैं इस पराये तन में। क्या करने? पतितों को पावन बनाने और है भी इनका गुप्त वेश इन्कॉग्निटो, जो सिर्फ बच्चे ही जान सकते हैं, और कोई भी जान नहीं सकते हैं; क्योंकि बाप बच्चों को ही आ करके पढ़ाते हैं और बच्चे हैं इन्कॉग्निटो, वो भी हैं आत्माएँ। अभी इनको आत्म–अभिमानी बनाय और बैठ करके आप समान बना रहे हैं। तो आत्मा की महिमा गाई जाती है। शरीर को(की) तो नहीं महिमा गाई जाती है ना बच्चे! वास्तव में हर एक की आत्मा ही गाई जाती है– भई फलाना था, बहुत अच्छा था। शरीर तो है नहीं, बाकी आत्मा के लिए कहा जाता था कि फलाने की आत्मा बहुत अच्छी थी, बहुत अच्छी तरह से ये पार्ट बजाया। पार्ट का तो किसको मालूम भी नहीं है बच्चे। बाकी ये ज़रूर महिमा करेंगे उस जीवआत्मा की– भई नेहरु बड़ा अच्छा था, शास्त्री बड़ा अच्छा था। अभी शास्त्री का तो शरीर नहीं है, बाकी कहेंगे– शास्त्री की आत्मा बड़ी अच्छी थी। तो बाप बैठ करके समझाते हैं कि मैं आया हूँ सवेरे–2 हाँ, इसको कहा ही जाता है– प्रभात। प्रभात सवेल को कहा जाता है। ए.एम. प्रभात हो गई है, पी.एम. फिर शाम हो गई। तो प्रभात तो ए.एम. हो गई, सवेल में। बारह बजे के बाद फिर दिन हो जाते हैं। उसको दिन ही शुरू कर कहेंगे; परन्तु उनका अच्छा नाम 'प्रभात' रख देते हैं। तो देखो, कहते भी हैं कि सिमरो, राम सिमर प्रभात। अभी आत्मा अपन को कहती है कि मुझे बाप को सवेल में उठ करके याद करना है, मोरे मन! क्यों(कि) मन–बुद्धि है ना जब! मोरे मन ये कह–कहती है, आत्मा कहती है अपने मन को कि मोरे मन! शरीर का तो कोई भी नाम नहीं लेते हैं। मेरी आँखें, मेरे नाक, मेरे कान, मेरे मत्था– ऐसे तो नहीं कहते हैं ना! कहते हैं कि मेरे मन! अभी ईश्वर को सिमरन करो, याद करो उनको। तो क्या होगा याद करने से? तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाएगा। अभी ये तो बिल्कुल सीधी और सहज बात है और याद करने लायक है; क्योंकि आत्मा को ही बोलते हैं बाप आ करके। गाया भी जाता है कि आत्माएँ–परमात्मा अलग रहे बहुकाल, तो ज़रूर बहुकाल के पीछे ज़रूर वो ही आ करके बच्चों को सिख/समझाते हैं, पावन बनाते हैं; क्योंकि महिमा भी उनकी कहते हैं कि हे पतित–पावन, आओ। तो देखो, एक भगवान को ही बुलाते हैं। भगवान तो है ऊँचे–ते–ऊँचा भगवान। अच्छा, अभी उनको ही आना है। कृष्ण को तो नहीं आना है ना! नहीं, उनको आना है। सारी विश्व के पतितों को पावन बनाने आना है। तो वो जैसे कल्प–2, अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ गया– हर 5000 बरस के बाद, ये तो नहीं भूलने की बात है, हर 5000 बरस के बाद बाबा आता है ज़रूर, बच्चों के पास;

क्योंकि हम सभी चिल्ड्रेन हैं, बच्चे के; क्योंकि ब्रदर्स हैं। ये तो पक्की याद है ना कि हम सभी आत्माएँ भाई–2 हैं और भाई–2 जो आत्माएँ हैं वो पतित बने हैं। उनके साथ शरीर भी पतित बना है। तो आत्मा ही पुकारती है– हे बाबा! आय करके हम पतितों को अभी पावन बनाओ। अभी ये बच्चे, इस समय में तुम बच्चे सभी जान चुके हो कि पावन किसको कहा जाता है, पतित किसको कहा जाता है। अभी तुमको बूझ पड़ी, समझ आई; नहीं तो कभी भी, किसको भी, कोई भी मनुष्यमात्र नहीं है जिनको ये मालूम है कि पतित कौन है, पावन कौन है। समझ में ही नहीं आते हैं उनको। अभी है भी बहुत, बच्चों के लिए तो बहुत समझ की बात हो गई कि बरोबर...पावन दुनियाँ नई दुनियाँ को कहेंगे। जिसको फिर स्वर्ग भी कहेंगे, हैविन भी कहेंगे। पुरानी दुनियाँ कलहयुग को कहेंगे, पतित भी उनको ही कहेंगे। अभी ये तो कितनी सहज बातें हैं समझने की; परन्तु सहज तब लगती है जबकि बाप आ करके बच्चों को समझाते हैं कि अभी तो समझा ना– पावन दुनियाँ नई दुनियाँ को कहा जाता है। सो तो पास्ट हो गई। उनके ये चित्र रखे हैं। पुरानी दुनियाँ, हाँ चित्र रखे हैं। पुरानी दुनियाँ तो है ही कलहयुग। उनका तो राज्य है नहीं नई दुनियाँ में। अभी ये तो बहुत ईज़ी हैं समझने की बातें। सिर्फ जा करके वहाँ समझावें– तो भई नई दुनियाँ और पुरानी दुनियाँ। नई दुनियाँ पावन और पुरानी पतित, अक्षर ही थोड़े हैं, कोई जास्ती भी नहीं हैं; क्योंकि बच्चे पुकारते ही इसलिए हैं कि हमको आय करके नई दुनियाँ के बनाओ या शांतिधाम के बनाओ। ये समझ तो बच्चों में होनी चाहिए ना– ये सृष्टि में आत्माएँ कैसे आती हैं? नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार,...पार्ट अनुसार, ये शुरू से ले करके कलहयुग तक ये आत्माएँ कैसे आती जाती हैं? बाप समझाया है कि ये जो झाड़ है, वो भी देखो आहिस्ते–2 वृद्धि को पाते हैं। इनमें ये तीन फाउण्टेन भी हैं, थुर भी है। तीन फाउण्टेन भी हैं; क्योंकि थुर को में फाउण्टेन में नहीं ले आएँगे ना बच्चे! थुर तो थुर ही है। पीछे हैं तीन ट्यूब्स– इस्लामी,बौद्धी,क्रिश्चियन। तीन निकलते हैं। देखो, इसको कहा ही जाता है– फ्लावर वॉस। अच्छा, फिर देखो कितनी ब्राचीज़ निकलती हैं। तुम कलकत्ते से तो होकर आई हो, ज़रूर बनियन ट्री देखा होगा ये। देखा था बच्ची? अरे, ये तो देखो, तुम बनियन ट्री नहीं देखा? (किसी ने कहा–देखा) देखा ना और इसने नहीं देखा! बनियन किसको, बड़ का झाड़। (किसी ने कहा– कलकत्ते में अभी नहीं गए थे) अच्छा, ये कलकत्ते में बच्ची नहीं गई। अच्छा, तुम तो देखा, आगे देखा हुआ है। अच्छा, खैर वो तो पास्ट हो गया। नहीं तो वास्तव में चक्कर लगाना होता है तो पहले कलकत्ते जा करके, फिर चक्कर लगाकर, फिर यहाँ से पास हो करके मुंबई चला जाते हैं। कलकत्ता तो बड़ा शहर है बहुत। बहुत बड़ा शहर है, वो तो देखने की चीज़ है। देखा होगा या न देखा होगा– ये तो खुद जानती होगी। देखा है बच्ची कलकत्ता? (किसी ने कहा–नहीं) तो तो तुमने कुछ भी नहीं देखा। कलकत्ता तो देखने जैसा है, उसकी रौनक और है और बॉम्बे की...रौनक और है। वो नदी के किनारे पर है और वो समुद्र के किनारे पर है और दिल्ली भले जमुना के किनारे पर है; परन्तु वो बीच शहर में है जैसे। कलकत्ता जैसे किनारे में है; क्योंकि समुद्र भी तो बाजू में है ना बिल्कुल ही! उनका नाम ही देखो कितना अच्छा रखा हुआ है। 'डायमण्ड हारबर' इंगलिश में रखा हुआ है। भई हीरे जैसा वो–2 ये बंदर। बंदर वो नहीं कहता हूँ पूँछ वाला। नहीं, जहाँ स्टीमर खड़ा रहता है वो बंदर। तो इसका नाम ही रखा है अंग्रेजी में– हीरे जैसा। क्यों हीरे जैसा? क्योंकि वो भी तो तीर्थ है ना बच्चे! ब्रह्मपुत्री, ब्रह्मपुत्रा और–2 सागर। ये है ना, जैसे ये देखो ब्रह्मपुत्री ये ब्रह्मा है ना! तो देखो, सागर इनमें प्रवेश किया हुआ है। वो भी ब्रह्मपुत्री जा करके सागर में प्रवेश करती है। तो बरोबर ये भी ब्रह्मा, तो ब्रह्मा कहेंगे ना इनको! ये भी तो बड़ी नदी है ना! बाबा ने समझाया ना बहुत दफा– ये है सबसे बड़ी नदी, ब्रह्म–ब्रह्मा सबसे बड़ी नदी। ये सागर नहीं इनको

कहेंगे। नहीं, ये सबसे बड़ी नदी, जो पहले–2 छोड़ करती है सागर में। इसके ऊपर बड़ा मेला लगते हैं; क्योंकि यहाँ भी मेला लगते हैं– जीव आत्मा और परमात्मा। तो देखो, यहाँ ब्रह्मपुत्री पर लगता है ना, ब्रह्मा के पास लगता है ना मेला! तो जहाँ इतना बड़ा मेला लगते हैं, वहाँ तुम गई नहीं देखो। वो सागर और नदी का बड़ा मेला लगता है। ठण्डी में, शिवरात्रि आती है तो जाते हैं बहुत। यूँ तो अपना बाप ने समझाया कि ये जो भारत है, सारा ही बड़े–ते–बड़ा तीर्थ है। उसमें भी बाबा ने समझा दिया है– तो जन्म एक...जगह में लेता है और शरीर दूसरी जगह में लेते हैं। है भारत के ही अंदर, कोई दूसरी जगह में नहीं है। उसको मगध देश कहा जाता है, मगरमच्छ जैसे वो मनुष्य रहते हैं वहाँ। है ना! बहुत खाते हैं, पीते हैं, पला मच्छू मगरमच्छ भी वहाँ रहते हैं। ये बहुत नामीग्रामी है। तो बाप बैठ करके समझाते हैं कि बच्चे, ये ये जो बनियन ट्री है वहाँ, वो अभी बिल्कुल ही, उसका मिसाल गीता में भी लगा हुआ है कि उनका थुर अभी है नहीं। बाकी तो एकदम हरा–भरा है, वो कभी भी सूखता नहीं है बच्चे। ये जो बनियन ट्री है ना, वो सूखता नहीं है, सदैव सब्ज रहते हैं। थुर है नहीं उसका। नहीं तो थुर जिसका चला जाते हैं वो तो सूख जाते हैं। पर इसका ही मिसाल देते हैं। तो बाप बैठ करके समझाते हैं बच्चों को, तो ये भी एक झाड़ है बड़ा, जिसका राज़ बैठ करके बाप समझाते हैं सारा। तुम्हारी बुद्धि में ये सारा झाड़ अभी है। ऊपर में बीज है; क्योंकि सत्–चित–आनन्द है और मनुष्य–सृष्टि का बीज–रूप है। ये भी तो गाया हुआ है और बीज को ही ऊपर याद करते हैं– ओ फादर! देखो, बेहद का बीज हुआ ना– फादर। अभी तुम बच्चों को अच्छी तरह से डिटेल में समझाया जाता है कि बरोबर बीज ऊपर में है और फिर उस बीज की क्रियेटर, बीज को क्रियेटर भी कहा जाता, तो क्रियेटर ऊपर में है, जिसको बच्चे याद करते हैं अभी। क्रियेटर को याद करते हो ना बच्ची, शिवबाबा को याद करते हो। तो क्रियेटर ऊपर में है ज़रूर। क्यों(कि) ऐसे ही याद किया जाता है– हे फादर, ओ बाबा, ओ पतित–पावन, हे परमपिता परमात्मा, हे दुःख हर्ता, सुख कर्ता! जब ये पुकारते हैं तो बुद्धि ऊपर में चली जाती है। तो उनको बुलाया जाता है कि आओ! आय करके देखो पढ़ाते हैं अभी तुम बच्चों को। देखो, बाबा समझा देते हैं ना– बच्ची, ये अक्षर सब रखना चाहिए– बाबा भी है, टीचर भी है, तो गुरू भी है सुप्रीम। ये तुम बच्चों को अभी अच्छी तरह से मालूम हो गया। दुनियाँ तो इन तीन अक्षरों को भी नहीं जानती है बिल्कुल। तो बाबा कहते हैं ना– ये तीन अक्षर तो ज़रूर उनकी महिमा में डालना ही चाहिए कि बाबा बाबा भी है सुप्रीम, सुप्रीम टीचर भी है, गुरू भी है। तो पुकारते हैं उनको। अभी बच्चे समझ गए कि इस झाड़ का जो फाउण्डेशन है सो है नहीं। अभी फाउण्डेशन लग रहा है और बाकी जो इतना बड़ा झाड़ है अनेक धर्मों का, देखो कितना है बड़ा–5, बहुत बड़ा है, तो वो निकल करके ये देखो देवताओं का (...), इसको कहा जाता है 'अद्वैत धर्म' यानी देवताई धर्म, बस। पीछे द्वैत आते हैं दूसरे–2। तो बुद्धि में बच्चों के है कि... पहले–2 तो आदि सनातन देवी–देवता धर्म है। पीछे अनेक धर्म उनमें से इमर्ज होते हैं, सो भी आधाकल्प के बाद; क्योंकि आधाकल्प में ताली नहीं बजनी चाहिए। दो हाथ से ताली बजती है ना, तो एक हाथ से ताली बजती ही नहीं है। तो इसलिए एक हाथ का जभी राज्य है, तो कोई भी ताली नहीं बजती है, कोई भी हंगामा नहीं, कोई लड़ाई नहीं, बच्ची कुछ भी नहीं है बिल्कुल ही; इसलिए उनको कहा ही जाता है– देवता और महिमा भी है इनकी बहुत और ये भी बच्चे समझते हैं कि बरोबर द्वापर तक तो कोई दूसरा राजा है नहीं, जो किसके ऊपर कहा करे; क्योंकि कहा हमेशा दूसरा कोई करते हैं, अगर बिगेड़ता है, दिलों को बिगेड़ता है, तो दूसरा आ करके बिगेड़ता है। बाकी ये तो आपस में क्षीर सागर, तो खीरखण्ड ठहरे ना बच्ची! देखो, वहाँ क्षीर सागर कहते हैं, तो यहाँ खीर/लून–पानी देखो कहते हैं और है भी लून–पानी देखो कितना है, घर–2

में भी लून–पानी है, जहाँ देखो तहाँ कोलाहल ही मचा हुआ है। है ना बच्चे सभी! ब्राह्मण ये तो ज़रूर समझते हैं कि बरोबर बाबा हमको आ करके पढ़ाते हैं। तो जो पढ़ाते हैं और बाबा है, उनके साथ लव तो बहुत चाहिए ना बच्चों का! इसको कहा ही जाता है– बिलवेड मोस्ट। यानी बस, इनसे प्यारा और कोई चीज़ है नहीं; क्योंकि ये प्राणों का नाथ यानी प्राण हमारा बचाते हैं, दुःख से प्राण बचा करके सुख में ले जाते हैं। इसलिए परमपिता परमात्मा को 'प्राणनाथ' कहा जाता है। जैसे स्त्रियाँ होती हैं ना, अपने पति को भी 'प्राणनाथ' कहती हैं; परन्तु वो तो प्राण नहीं बचाते हैं ना! नहीं! बाबा तो प्राण बचाते हैं ना! बाबा तो अमरपुरी में ले जाते हैं ना! बाबा हर एक को अमरनाथ और अमरनाथनी बनाते हैं ये अमरकथा सुनाय करके। तो बच्चों को तो बहुत ही खुशी होनी चाहिए, अथाह, खुशी का पारावार नहीं होना चाहिए। सो भी वास्तव में जो यहाँ रहते हैं उनको तो बहुत खुशी होनी चाहिए; क्योंकि जैसे कि बापदादा के गोद में बैठे रहते हैं। यहाँ तो जैसे, अभी गोद में तो कोई नहीं बैठते हैं ना सारा दिन! घर में रहने से तुम अभी जैसे कि ईश्वरीय परिवार में रहे पड़े हो। बस, यहाँ देखते रहते हो ना! इन आँखों से बापदादा को भी देखते रहते हो ना! अभी तो सिर्फ दादा तो नहीं है ना, अभी तो बापदादा हो गया। तो यहाँ इनको घड़ी–2 देखते हो, तो घड़ी–2 देखने से ज़रूर बाप याद आएगा ना– ये बाबा जाता। कौन बाबा जाते हैं? बापदादा जाते हैं, भई शिवबाबा। तो तुम्हारा तो घड़ी–2 शिवबाबा को याद करना होता है; परन्तु कोई याद करे ऐसे। ऐसे युक्ति से– शिवबाबा जाते हैं, बापदादा जाते हैं। अगर सिर्फ भी कहो कि शिवबाबा जाता है तो शरीर बिगर जाएगा वरी कैसे? कोई जाएगा थोड़े ही शरीर बिगर। तो तुम सिर्फ ये शिव का नाम याद करते रहो– शिवबाबा जाते हैं, शिवबाबा घूमते हैं, शिवबाबा ये करते हैं, शिवबाबा, तो कितना तुम्हारा शिवबाबा को याद करने का मिल जावे। बाप तो रस्ते बताते रहते हैं बहुत सहज, कि आत्मा तो यहाँ देखने में भी नहीं आती है। बाकी शिवबाबा जो हम कहेंगे, सो तो समझेंगे ना– शिवबाबा इस शरीर में ये जाते हैं, ये जाते हैं, ये जाते हैं। देखो, तुम लोग लिखते भी हो, लिफाफे के ऊपर भी लिखते हो– शिवबाबा केअर ब्रह्मा। भई केअर ब्रह्मा लिखते हो ना, तो ज़रूर ब्रह्मा, शिवबाबा है ना इसमें! तो अगर तुम्हारी टेव ये अंदर में पड़ जावे। बाहर में नहीं, बाहर में कहने की तो दरकार नहीं है वास्तव में; परन्तु बाहर में तुमको कहना पड़े तो 'बापदादा' ज़रूर कहना पड़े; क्योंकि दो आत्माएँ हैं एक शरीर में। क्योंकि एक तो देखो फर्क भी कितना है, दो रतन पड़े हुए हैं। एक है अंगूठी, हाँ ये–2 पाई–पैसे का रतन और उसमें बाकी आ करके देखो हीरा बैठा है अंदर। तो देखो, ये डबली ठहरी ना! इस डबली में, जैसे बाप होते जवाहरी तो बहुत अच्छा हीरा देखता, तो सोने की डबली बना करके उसमें डाल देता। तो देखो, ये सोने की तो डबली है नहीं, डब्बी है नहीं। ये है तो यही ये पतित। इसमें आ करके ये हीरा बनाने वाला, हीरा आ करके यहाँ बैठे हैं जैसे। बाप को बीच में रखा जाता है ना एकदम! नौ रतन की जब चीज़ बनाई जाती है, तो हीरे को बीच में रखा जाता है, बाकी पास में। तो देखो, हीरा शिवबाबा इनमें आ करके बैठा है। तो देखो, डबली है ना सोने की जैसे कि! है सोने की नहीं, है पतित। वो बाबा खुद कहते हैं ये सोने की नहीं है। सोने की डबली में मैं आता नहीं हूँ। जब ये सोने की बनती है, आत्मा इसमें प्योर बनती है तो मैं इसमें नहीं आता हूँ कभी भी। बाकी हाँ, जब ये ये पाई–पैसे की बनती है, ठिक्कर की, भित्तर की, पत्थर की कहो; क्योंकि पत्थर है ना, पत्थर–बुद्धि हैं ना सभी! तो तब मैं इसमें आता हूँ इसको पारस बनाने के लिए। अभी पारस बना दिया, फिर पारस को क्या बनाएँगे? पारस को तो कुछ बना नहीं सकता हूँ ना बच्चे! तो मैं आता ही हूँ इस डबली में, बैठ करके इसको पारस बनाता हूँ। तो तत् त्वम्। 'तत् त्वम्' अक्षर जो निकला हुआ ना, सो यहाँ से निकला। शिवोऽहम्, तत् त्वम्– ऐसे

कोई कह नहीं सकते हैं। ये बाप कहते हैं कि मैं भी ऐसे नहीं कहूँगा कि शिवोऽहम्, तत् त्वम्। तुम वरी शिव थोड़े ही हैं! नहीं, तुम सालिग्राम ऐसे कहेंगे। तो अपन को तो ज़रूर शिव कहेंगे समझाने के लिए और तुम बच्चों को सालिग्राम कहेंगे और कहते भी हैं– हे बच्चो! हे सालिग्रामो! तो सालिग्राम कहकर बुलाते रहते हैं ना! बच्चे जो कुछ पढ़ाता हूँ, जो सिखलाता हूँ, उसमें भी जो फर्स्टक्लास बात है नंबरवन, जो अच्छी गायन की हुई है मन्मनाभव की अर्थात् मामेकम् याद करो, ये तो बच्चों को बड़ा सहज है बिल्कुल ही; क्योंकि इतना समय तो देहअभिमानी बन करके, भले शिव को याद भी करते थे, कभी कोई करते हैं, कोई कृष्ण को, कोई किसको। ऐसे तो नहीं है कि कोई कृष्ण को याद करते, शिव को नहीं याद करते होंगे। नहीं, कृष्ण को जब याद करते हैं तब यहाँ याद करते हैं इस–3 सृष्टि पर और शिव को जब याद करते हैं तब वो ब्रह्मतत्व में याद करेंगे। यहाँ किसको भी याद नहीं कर सकेंगे; क्योंकि कृष्ण तो यहाँ था ना बच्ची! तो यहाँ किसको याद करना है; क्योंकि वो देहधारी था इसलिए उनको कभी कोई याद नहीं कर सकते हैं। भक्तिमार्ग में तो बात ही छोड़ दिओ, बाकी ज्ञानमार्ग में तो बाप को ही याद करना पड़ता है। तो बाप बैठ करके ये यादगिरी दिलाते हैं बच्चों को– तो तुम मीठे–2 बच्चों, तुम भक्तिमार्ग में ये कितना हमारा याद किया है, कितने अच्छे आशिक थे और मुझे याद करते थे। सिर्फ मेरा ऑक्युपेशन का तुम बच्चों को पता नहीं था, बाकी मेरे को कभी कोई भूल नहीं सकते हैं। सुख है तो बात ही छोड़ दिओ, बाकी दुःख में कभी भी कोई भूल नहीं सकते हैं। कोई–न–कोई जन्म में, कुछ–न–कुछ जो हैं बाबा के बच्चे; क्योंकि बाबा के बच्चे ही तो याद करेंगे ना, और तो कोई याद नहीं कर सकते। और तो अनेक प्रकार के मनुष्य, कोई नैचर को मान देते हैं, कोई किसको मानते हैं, कोई किसको मानते हैं। बाकी जो बच्चे हैं, तभी बाबा कहते हैं कि सबसे अच्छा अभी यादगार तो शिव का मंदिर है काशी का। वो इतना अभी नहीं है वो सोमनाथ का मंदिर; क्योंकि वो तो दूस/टूट गया, फूट गया। तो इसलिए वो इतना नहीं जितना काशी को रखा है, महत्व काशी को दिया है। जो वो धाम होते हैं ना, उसमें भी काशीधाम रख दिया हुआ है। वो जो उज्जैन जहाँ वो–2 सोमनाथ का मंदिर था, उसको धाम नहीं रखते हैं, काशी को धाम रखते हैं; क्योंकि किनारे पर भी है गंगा के और बच्चे वहाँ बहुत बैठे हुए; बनारस में तो गई होगी तुम कि नहीं गई हो, बनारस में भी नहीं गई हो क्या? (किसी ने कहा–अभी नहीं) काशी में, नहीं, अभी–3 की यात्रा। (किसी ने कहा– अभी की लाइन में गई है) हाँ, तो बनारस भी बहुत अच्छी है। उसमें बहुत साधु,संत,महात्मा रहते हैं। नंबरवन है काशी, पीछे है हरिद्वार वास्तव में; क्योंकि काशी में तो कलवट खाते हैं ना– शिवकाशी–3। वहाँ तो हरिद्वार कहते हैं ना! यहाँ तो शिव की काशी का नाम, शिव का याद आती है यहाँ; इसलिए जो भी साधु–संत बैठे रहते हैं– शिवकाशी–3। ये शिव काशी, काशी को बनारस भी कहते हैं। असुल नाम इसका 'काशी' था, पीछे बनारस रखा है अंग्रेज़ों ने। अभी तो नाम दूसरा रख दिया है (किसी ने कहा–वाराणसी) वाराणसी। नाम असुल इसका सच्चा नाम 'काशी' है। फिर ये जो शूद्र सम्प्रदाय हैं, उन्होंने बैठ करके देखो नाम फिराय दिया है काशी का। वाराणसी या बनारस, है थोड़ा ही फर्क है; परन्तु जैसा राजा होता है ना, वो शहरों का भी नाम बदलते जाते हैं, गलियों का भी नाम बदलते जाते हैं, बहुतों चीज़ को नाम बदलते जाते हैं। दिल्ली का भी नाम बदला हुआ है। आगे असुल कोई दिल्ली नहीं कहते थे, आगे तो पारस/प्रस्थ/इंद्रप्रस्थ कहते थे। (किसी ने कहा– हस्थिनापुर कहते थे) हस्थिनापुर! (किसी ने कहा– जी हाँ) ये इंद्रप्रस्थ नाम ठीक है; क्योंकि परियाँ रहती हैं ना इंद्र की! है ना– वो पुखराजपरी, नीलमपरी, वो परी। तो ये परियाँ किसको कहते हैं? इंद्र के। तो इंद्र तो कोई बरसात–वरसात नहीं बरसाते हैं ना! नहीं गाया जाता है कि इंद्र की सभा में कोई परी

कोई छी–2 को ले गए तो उनको श्राप मिल गया कि तुम जाकर पत्थर बन जाओ। तो पत्थर बन जाओ या ऊपर या नीचे की तो बात नहीं है, ये तो बाप यहीं बताय दिया है कि जो छी–2 को ले आते हैं साथ में यहाँ पतित को, तो गोया उनको जैसे श्राप मिलते हैं कि तुम जाकर फिर भी पत्थर–बुद्धि बन जाओ; क्योंकि है तो सभी पत्थर–बुद्धि ना! तो हैं बातें सब यहाँ की। इंद्रप्रस्थ नाम बिल्कुल ठीक है, हो सकता है। बाकी वो तो इंद्र तो है नहीं ना, परियाँ–वरियाँ तो कुछ नहीं ना! परियाँ तो अभी तुम बन रही हो सच्ची–2 दैवी गुणों की परियाँ। तो जब दैवी गुण तुम धारण करते हो तो बरोबर और बस इनसे तो ऊँचा तो कोई परी–वरी तो होती नहीं है ना बच्ची, इसको ही स्वर्ग की परियाँ भी कहते हैं। तुम बैठे हो, यहाँ पढ़ रहे हो अच्छी तरह से। कहाँ जाने के लिए? भई, परिस्तान में चलने के लिए। अभी परिस्तान भी तो यहीं बनने का है, दूसरी जगह तो नहीं है ना! तो बच्चे तो समझ गए हैं कि घर जा करके फिर वापस आएँगे; क्यों(कि) घर तो ज़रूर जाना ही है। जाना भी नंगा ही है। जाना भी पवित्र बन करके जाना है; नहीं तो सज़ाएँ खा करके जाना है। फिर प्योर हो करके फिर वहाँ से यहीं आना है, नंगा फिर भी आना है। ये तो बिल्कुल सहज समझ गई हो कि नंगा जाना है, नंगा आना है। नंगा जाना है अंत में, जब वो पुरानी दुनियाँ खत्म होती है। फिर हम आते हैं नई दुनियाँ में। तो ये तुम बच्चे समझाते हैं कि ऊपर से आते ही रहते हैं, आते ही रहते हैं, आते ही रहते हैं, नंबरवार इस समय के पुरुषार्थ अनुसार। परिस्तान तो तुम्हारी बुद्धि में घूमता रहता है, घूमना चाहिए; क्योंकि तुम पढ़ते ही हो परिस्तान के लिए। तो ज़रूर घूमना चाहिए ना! सो भी तुम जानते हो कि अभी जो पढ़ते हैं, हम 21 जन्म के लिए पढ़ते हैं। तो तुम्हारे पास तो परिस्तान तो सदैव ही रहना चाहिए अभी पिछाड़ी में, जबकि तुम पढ़ रहे हो। ये भी जानते हो– बाप ने समझाया है कि तुम पढ़ते रहते हो, पढ़ते–2 तुम परिस्तान में चले जाएँगे और स्वर्ग की परी कहा जाता है, और तो कोई परियाँ होती नहीं हैं ना बच्ची! परियाँ कोई होती नहीं हैं दूसरी। सतयुग और त्रेता, परियाँ कहाँ से आईं? फिर द्वापर और कलहयुग! ये तो मनुष्य ही सिर्फ फिरते जाते हैं। अगर सच्ची–2 परियाँ बनते हो, तभी तुम जानते हो कि हम परिस्तान की परियाँ बन रहे हैं। कैसे? देखो ऐसे। इनसे ऊँचा वेश तो दूसरे का होता ही नहीं है। इतना धनवान, इतना ये, ये तो कुछ भी नहीं है बच्ची! ये तो बच्चों को अच्छी तरह से विचार करना चाहिए कि ये तो कुछ भी नहीं है हीरा–वीरा! ये तो हीरे तो ये लोग बड़े–2 पत्थर उठा करके उसमें, मकानों में, उनमें डाल देते हैं। इनके जो दरवाजे बनते हैं अंदर जाने का, उसमें भी इतना बड़ा–2 मणियाँ–पत्थर बहुत लगाते हैं, झिरमिर होती है वो। परिस्तान तो पीछे क्या! तो इतना तो तुम ऊँचा पद पाय रही हो; क्योंकि वो बड़े–2 पत्थर होते हैं, तो तुम तो जानते हो ना, जबकि गजनवी ही लूट करके गए, फिर आ करके यहाँ अपने ये कब्रों और इन्हों में लगाए हैं। जो फिर ये इस(को) गवर्मेण्ट निकालकर ले गई है। क्या निकालके ले गई, ये तो समझ सकते हो ना बच्ची! अभी अगर वो चीज़ होवी/होती तो कितना दाम हो जाता। तो तुम कहेंगे– भला वो तो कट गए ना सभी! वो तो कट गए, वो तो सभी हीरे बन गए, माणिक बन गए हीरे। फिर सतयुग में इतने वरी हीरे और ये बड़े आएँगे कहाँ से? ऐसे बहुत ही प्रश्न तुम्हारे से पूछते हैं। वहाँ तो कारून का खज़ाना था। उसको तो परिस्तान ही कहेंगे। पीछे फिर वो फिर राजाई और वो धन इतना सब आएँगे कहाँ से? तो बाप कहते हैं– बच्ची, जो चीज़ भी खाली हो जाती है, जब ये बाइस्कोप देखते हो, तो देखते हो कि ये सब लड़ाई में टूट–फूट गया। फिर भी जभी शुरू होगा तो वो तैयार ही रहते हैं। ये भी ऐसे ही है। ऐसे नहीं है कि जैसे अभी ये इनसॉलवेन्सी है तैसे सतयुग में भी इनसॉलवेन्सी होगी। कभी हो सकते हैं ऐसे? ना, क्योंकि फिर से ये रिपीट आते हैं। इसलिए ऐसे–2 खयालात दिल में नहीं ले आना कि

ये ये हो गया, पीछे ये कहाँ से आएँगे इतना? अभी तो कुछ भी नहीं है, पीछे (...)! अरे पर था, सो तो जरूर होगा, तुम पुरुषार्थ कर रहे हो राजधानी के लिए, तुमको राजधानी ज़रूर मिलने की है ना! तो वो ख्याल नहीं उठाना चाहिए। फिर ड्रामा बिल्कुल काम में आते हैं अच्छी तरह से। बैठ करके समझाते हैं– ये सभी ख्याल उड़ाय करके– ये फिर कैसा होगा, ये फिर कैसा हो गया, नहीं–2, पहले तो तुम सतोप्रधान तो बन जाओ। तो पीछे जो भी था कल्प पहले, कल्प–2 सो तो होता ही है, राज्य तो इनका ही होगा, दूसरा तो कोई नहीं होगा ना! तो जो इनके राज्य में होगा सो फिर भी तो होगा ही। स्वर्ग तो स्वर्ग ही होगा। स्वर्ग तो स्वर्ग ही है, नर्क तो नर्क ही है। नर्क अलग है, स्वर्ग अलग है। वो नई दुनियाँ है, सब–कुछ नया परिस्तान है। ये कब्रस्तान है। सो कब्रस्तान के पीछे परिस्तान तो ज़रूर बनेगा ना! उनमें कभी भी संशय नहीं ले आना चाहिए; क्योंकि बाप ने समझाया कि वर्ल्ड की हिस्ट्री और जॉग्राफी (...)। अभी वर्ल्ड की हिस्ट्री–जाग्रफी तो अभी तुम्हारे बुद्धि में है ना बच्चे अभी– तो कैसे ये रिपीट होती है, कैसे पास्ट–प्रेजेण्ट, फिर पास्ट सो प्रेजेण्ट, प्रेजेण्ट सो फिर फ्यूचर। तो ये तो बाप ने समझा दिया ना बच्चों को अच्छी तरह से कि इसमें कोई संशय लाने की दरकार नहीं है; क्योंकि हिस्ट्री और जाग्रफी तो एक ही होती है ना बच्ची, दूसरी तो होगी ही नहीं कभी; क्योंकि आत्मा अविनाशी है ना! ये तो विनाश होने का नहीं है और फिर न उनमें जो पार्ट भरा हुआ है वो कोई विनाश होने का है। तो ज़रूर वो ही आत्मा होगी, उनमें जो पार्ट है, वो ही होगा, सो ही फिर रिपीट करेंगे। तो इतना डीप जाना है बच्चों को अच्छी तरह से। फिर ये तो समझते हो बच्चे, जितना जो सन्मुख रहते हैं, वो तो सुनते ही रहते हैं। ये नई–2 अच्छी–2 बातें, याद करने जैसी बातें सुनते ही रहते हैं। अगर सुनते ही जाएँ, सुनते ही जाएँ और फिर सुनावें कैसे, किसको सुनावें! सुनाने के लिए फिर बाहर में जाना पड़ता है, गाँव–2/शहर–2 में जाना पड़ेगा; क्योंकि प्रजा भी बनानी है बहुत। एक जगह ठिकाने रह भी नहीं सकते हैं। तो तुम्हारी बुद्धि में सारा ऊपर से ले करके, देखो बाप को भी जान गए, रचता को भी जान गए, रचना के आदि,मध्य,अंत को भी जान गए। तो तुम्हारा तो उठते–बैठते, तुम वास्तव में जैसे एक बोलता,चालता,फिरता लाइट हाउस हो गया; क्योंकि बुद्धि में तुम्हारे ये किसको भी मैसेज देने, ये बुद्धि में आ गया; क्योंकि वो पहुँचाने के लिए शांतिधाम और सुखधाम, तो ज़रूर लाइट हाउस हो गया ना! शांतिधाम को याद करो, सुखधाम को याद करो, तो लाइस हाउस हो गया ना बच्ची! तो तुम्हारा लाइस हाउस जैसे फिरता ही रहते हैं। जैसे स्वदर्शन चक्र फिरता है तैसे लाइट हाउस भी ऐसे ही फिरता रहता है। फिरता है ना बच्चे? थोड़ा समय अंधियारा हो जाता है, फिर चक्कर दिखलाते हो। तो ये भी ऐसे ही है– थोड़ा समय तो अंधियारा रहता है, फिर चक्कर दिखलाते हैं। बंदर को दिखलाते हैं, पीछे बंद हो जाते हैं। पीछे फिर दिखलाते हैं, फिर बंद हो जाते हैं। तो तुम भी जैसे लाइट हाउस हो। तुम जा करके सबको बताते हो कि शांतिधाम को याद करो, सुखधाम को याद करो; भई शांतिधाम को याद करो, सुखधाम को याद करो। तो तुम्हारी बुद्धि में तो होना चाहिए ना दोनों चीज़! है ना! तो उसको ही तो मन्मनाभव, मद्याजीभव कहा जाता है। तो ये तुम्हारी बुद्धि में भी ज़रूर रहना चाहिए– हमको पैगाम देना है। कहाँ का? शांतिधाम का, सुखधाम का। किसको पैगाम देना? हम जीवआत्माओं को। आत्मा को ही देना है पैगाम। भला ये तो गडबध करके छोड़नी चाहिए ना! गडबध देखी ना यहाँ बच्ची हाँ! ये शांतिधाम को याद करो और सुखधाम को याद करो और दुःखधाम को भूल जाओ। अभी ये तो बिल्कुल सिम्पुल बात है कि इस छी–2 दुनियाँ को भूल जाओ और शांतिधाम, जिसके लिए सभी भगत इतनी मेहनत–2 करते हैं, शांतिधाम को याद करो। तुम जो शांति–3 कहते हो, चलो जाकर बैठ जाओ, शांति जितना चाहिए और

फिर सुखधाम को याद करो, दुःखधाम को भूलते जाओ। अभी ये मंत्र भी कितना सहज है। ये भूल जाना चाहिए। बाबा कहते हैं इन आँखों से जो कुछ भी देखते हो, इनको भूल जाओ। बाकी क्या देखते हो, ऐसे नहीं कि नहीं देखते हो। शांतिधाम भी देखते हो, ऐसे थोड़े ही है नहीं देखते हो। तुम्हारे बुद्धि में है कि हम निवासी हैं शांतिधाम के। तो जैसे आत्मा को जाना जाता है तैसे शांतिधाम को भी जाना जाता है ना! तो ये तो तुम जानते हो कि हम कोई यहाँ के वासी थोड़े ही हैं। हम आत्माएँ तो शांतिधाम के वासी हैं ना! पीछे हम आत्माएँ सुखधाम के वासी होते हैं ना! पीछे हम जीव–आत्माएँ दुःखधाम के वासी रहते हैं। अभी ये तीन अक्षर क्यों नहीं याद पड़ना चाहिए बच्चों को! शांतिधाम, सुखधाम, ये दुःखधाम को भूलते जाओ; क्योंकि खत्म होने का है। क्योंकि अंत है एकदम, वानप्रस्थ अवस्था है सबकी। अच्छा चलो बच्ची, टोली खिलाओ। सहज रस्ता बताते हैं, इसको कहते हैं– बहुत सहज। कौन–सा सहज? सिर्फ किसको कहो कि शांतिधाम को याद करो ना, जहाँ से नंगे आए हुए हो, वो वो धाम को, शांतिधाम को याद करो वा परमधाम को याद करो। पीछे स्वर्ग को/सुखधाम को याद करो। देखो, ये कितना सहज है! तुम बच्चों को कितना सहज जाता ज्ञान में और ये बच्चे इस दुःखधाम को भूल जाओ। अभी क्या है, तुमको तकलीफ है कुछ? पीछे क्यों, ये भला याद क्यों नहीं रहता है, जो सबको पैगाम भी दे सको! ये बहुत सहज है बच्ची, बहुत सहज समझेगा कि ये सुखधाम को याद करो। देखो, नीचे तले में पड़े हैं ना बच्चे! देखो वो नीचे हैं ना, आग लगने की है ना! तो बोलता है– ये दुखधाम है ना, इसको आग लगती है, तुम सुखधाम को याद करो। तो सुखधाम को याद करेंगे तो बाप को याद करेंगे, तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा। अच्छा भला, शांतिधाम को भी याद करते रहो, बाबा कहते हैं, तो भी अंत मते सा गत शांतिधाम में चले जाएँगे। शांतिधाम में तो बाबा ही रहते हैं और ये रस्ता भी तो बाबा बताते हैं ना! तो इस जैसा मोस्ट सिम्पुल–2, सिम्पुल–ते–सिम्पुल, ये तो याद करना ना, ये तो नहीं भूल जाना है। भला ये क्यों भूला जाता है? किसको घड़ी–2 पैगाम देगा तो हिर जाएँगे। अरे बच्ची, जितने जास्ती पैगाम... इतना–2 याद बहुत करेंगे, और तो कुछ कहना नहीं है ना किसको भी– शांतिधाम, सुखधाम, ये है दुःखधाम। कलहयुग का अंत है, संगमयुग है, सो तो दुःखधाम ही है। कलहयुग को भी सारे को दुःखधाम ही कहेंगे; परन्तु जब बाप आते हैं तभी आ करके ये सिखलाते हैं। तो हो जाती है पिछाड़ी एकदम। ..... देखो, नारियल खाते हो। नारियल का वो जो निकलते हैं कोको, वो सब घी में खाते हो, वो कम चीज़ थोड़े ही है!....

मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप और दादा का दिल व जान, सिक और प्रेम से यादप्यार और गुडमॉर्निंग।